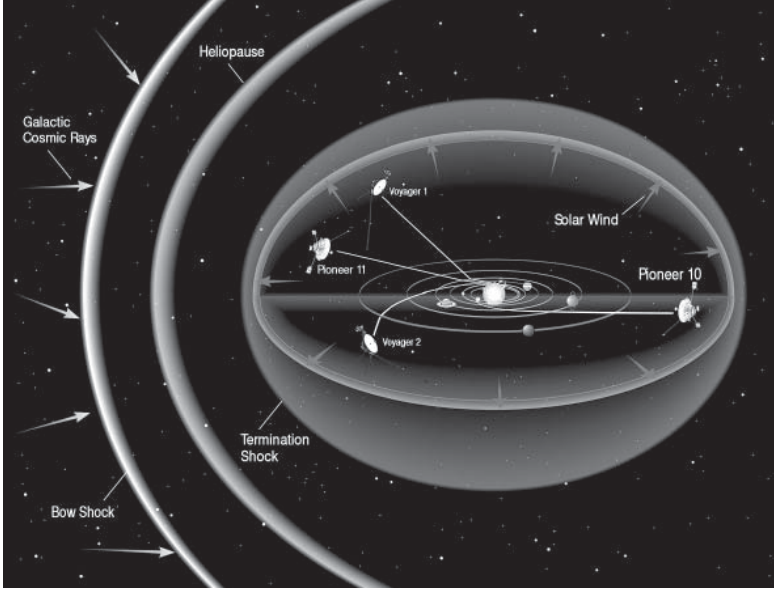


ट्रॉय का घोड़ा

जयंत विष्णु नारलीकर



जैकसन के कण्ट्रोल पैनल की लाल बत्ती जल उठी। साथ ही बीप.... बीSSS...प... बीप की आवाज़ भी आई। कण्ट्रोल का ध्यान आकर्षित करने हेतु यह सावधानी थी।

जैकसन अपने तीन सहकर्मियों के साथ स्पेस-सेंसर-6 (SS-6) से पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा था। अन्तरिक्ष में गुप्तचरी करने का काम उन्हें सौंपा गया था। प्रत्येक की ड्यूटी साढ़े छः घण्टे की होती। इन प्रत्येक साढ़े छः

घण्टों के दौरान पहले तथा आखिरी तीस मिनट मौजूद रहते - दो लोग। एक वह जिसकी ड्यूटी खत्म होने को है और दूसरा वह जिसकी ड्यूटी शुरू हो रही है। कोई अत्यन्त विशेष स्थिति होने पर ही इसमें बदलाव की अनुमति थी।

क्या इस समय ऐसी परिस्थिति निर्माण हो गई थी? लाल बत्ती तथा सिग्नल की आवाज़ इसी बात का संकेत दे रहे थे कि पृथ्वी के

परिमण्डल में किसी अज्ञात वस्तु ने प्रवेश किया है।

सन् 2050 की बात है। बहुत सारे अन्तरिक्ष यान पृथ्वी की परिक्रमा कर रहे थे। अधिकतर यानों को SS अन्तरिक्ष यान के कम्प्यूटर गणकयंत्र ने दर्ज कर लिया था। यदि दर्ज किए गए के अलावा कोई नया यान उस क्षेत्र में आता तब लाल बत्ती जल उठती थी। साइरन बजता था। अमूमन ऐसा होता नहीं था क्योंकि विभिन्न राष्ट्रों के जो 'गुप्त यान' भी अन्तरिक्ष में चक्कर काट रहे थे, उन सभी की जानकारी बेशक SS-यानों के पास नहीं थी परन्तु इसकी समस्त जानकारी, पृथ्वी पर स्थित युनाइटेड स्पेस फेडरेशन (USF) के विशाल गणकयंत्र में अवश्य दर्ज होती थी। इसे गुप्त रखा जाता था। इसकी गोपनीयता बनाए रखने हेतु प्रत्येक राष्ट्र का अपना निजी संकेत (शब्द अथवा अंक के रूप में) तय रहता था। इसके फलस्वरूप हरेक राष्ट्र को अपने यान की जानकारी USF में दर्ज करवाना अनिवार्य था। अनुमति के बगैर अन्तरिक्ष में यान छोड़ने पर मनाही थी... यदि दर्ज न किया गया यान अन्तरिक्ष में पाया गया तो उसे भस्म कर देने का अधिकार USF को था।

जैक्सन ने इस अपरिचित यान के बारे में पृथ्वी पर स्थित USF के कम्प्यूटर को सन्देश देकर जानकारी चाही। तुरन्त वहाँ से जवाब आया।...

इस यान का पंजीयन हमारे यहाँ नहीं है।

बस... यहीं से यह किस्सा आरम्भ हो गया।

जैक्सन ने अपने दोनों जागृत सहकर्मियों को बुलवाया। उनके नाम थे, गुप्ता तथा टाकेनो। SS-6 का चौथा प्रवासी नागोविच खर्राटे भर रहा था।

जैक्सन ने उन दोनों को स्थिति से अवगत करवाया और कहा, "USF के लोगों ने तमाम राष्ट्रों को हिदायत दी है कि यदि यह अनाधिकृत यान, किसी राष्ट्र-विशेष का है तो वह तुरन्त स्वीकार करे, वरना अगली कारवाई के लिए तैयार रहे।"

"ऐसा पहले तो कभी नहीं हुआ था। देखें क्या सूचना आती है।" गुप्ता ने कहा। जैक्सन के बाद उसकी ही ड्यूटी थी।

सभी बड़ी उत्सुकता से इन्तज़ार करते रहे।

* * *

जिनेवा के USF के हेडक्वार्टर में ऊपरी तौर पर यही जान पड़ रहा था कि सारा कामकाज व्यवस्थित रूप से चल रहा है परन्तु अन्दर जो हड़कम्प मचा था, उसे सिर्फ कुछ गिने-चुने लोग ही जानते थे। समस्त राष्ट्रों के प्रतिनिधियों की एक आपात बैठक का आयोजन किया गया था। सभा के अध्यक्ष ने कहा, "दोस्तो, पृथ्वी के निकट एक अज्ञात यान आ गया है। किसी भी राष्ट्र ने इसकी ज़िम्मेदारी

स्वीकार नहीं की।” प्रतिनिधियों के बीच शुरू हो गई कुलबुलाहट एवं बुदबुदाहट को रोकते हुए उन्होंने आगे कहा, “पंजीयन की प्रक्रिया को आरम्भ किए तीस वर्ष हो गए। शुरू में कुछ राष्ट्रों ने सहयोग नहीं दिया था परन्तु उसके दुष्परिणामों को उन्हें भुगतना पड़ा था। दर्ज न किए गए उनके यान नष्ट कर दिए गए। पिछले बीस वर्षों में आज-सी स्थिति कभी भी नहीं आई थी। अतः हम सभी को निर्णय करना है कि इस नए यान का क्या किया जाए। समय बहुत कम है।”

“किस मार्ग से आ रहा है यह यान?” एक प्रतिनिधि ने पूछा।

“SS-6 की जानकारी के मुताबिक, वह मंगल तथा पृथ्वी की कक्षाओं के दरम्यान है और पृथ्वी की ओर आ रहा है। आपकी डेस्क पर रखे टी.वी. के स्क्रीन पर, मैं यान की कक्षा को दिखाता हूँ।” अध्यक्ष बोले।

“मेरी जानकारी एवं अन्दाज़ के अनुसार, यह यान कल चन्द्रमा की कक्षा के अन्दर पहुँच जाएगा और दो दिन में वह SS यानों की कक्षा तक आ पहुँचेगा।” एक वैज्ञानिक ने कहा।

“आपका अन्दाज़ा बिल्कुल सही है। डॉ. फ्लेमिंग!” USF के सेक्रेटरी ने प्रशंसा से कहा। आज छोटे-छोटे कम्प्यूटर एवं कैलकुलेटर्स के ज़माने में अपने दिमाग में हिसाब लगाने वाले लोग बिरले ही हैं। अगर डॉ. फ्लेमिंग आज से एक सदी पहले भी होते तब

भी बेजोड़ ही होते। फिर सेक्रेटरी ने कम्प्यूटर पर मिली यान की जानकारी से सभी को अवगत करवाया। प्रतिनिधियों के बीच मंत्रणा एवं विवाद आरम्भ हो गए। कोई भी स्पष्ट मत सामने नहीं आ रहा था। अन्त में डॉ. फ्लेमिंग बोले, “हमारे पास दो विकल्प हैं। पहला यह कि किसी अस्त्र के द्वारा यान को नष्ट कर दिया जाए। यह कम खतरे वाला अत्यन्त सरल उपाय है परन्तु मुझ जैसे वैज्ञानिक विचार वाले व्यक्ति को, यह विकल्प कदापि पसन्द नहीं। यह यान कहाँ से आया है, इसके अन्दर क्या है आदि बातों को जाने बगैर इसे नष्ट कर देना, हाथ आए अवसर को गँवा देने जैसी बात होगी। मेरे विचार से यह यान पृथ्वी के बाहर से आया है। हम इसका अवलोकन करेंगे। यदि खतरा महसूस हुआ तो नष्ट भी कर देंगे। नष्ट कर देने का कारण पर्याप्त और अन्तिम विकल्प होना चाहिए।”

“यदि अवलोकन के दरम्यान खतरा पैदा हो जाए तब?” अनेक लोगों के मन में उठ रही आशंका को अध्यक्ष ने कह डाला।

“उस खतरे को स्वीकारना होगा।” डॉ. फ्लेमिंग बोले।

“हर मोड़ पर खतरों से जूझकर ही मानव ने यह सफलता पाई है। खतरे का सामना दिमागी तौर पर अत्यन्त सावधानी बरतकर ही करना होगा। जैसे... इस नए यान का रिमोट सेंसिंग चित्रांकन कर लेने में क्या हर्ज है?”

स्पेस-सेंसर के प्रमुख ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया। SS यान के सभी सदस्य निडर और साहसी थे। उन्हें दुख इसी बात का था कि खतरे वाला कोई काम करने का मौका, उन्हें मिल नहीं पाया था।

“हाँ... ना...” करते-करते अन्त में डॉ. फ्लेमिंग का प्रस्ताव मान लिया गया।

* * *

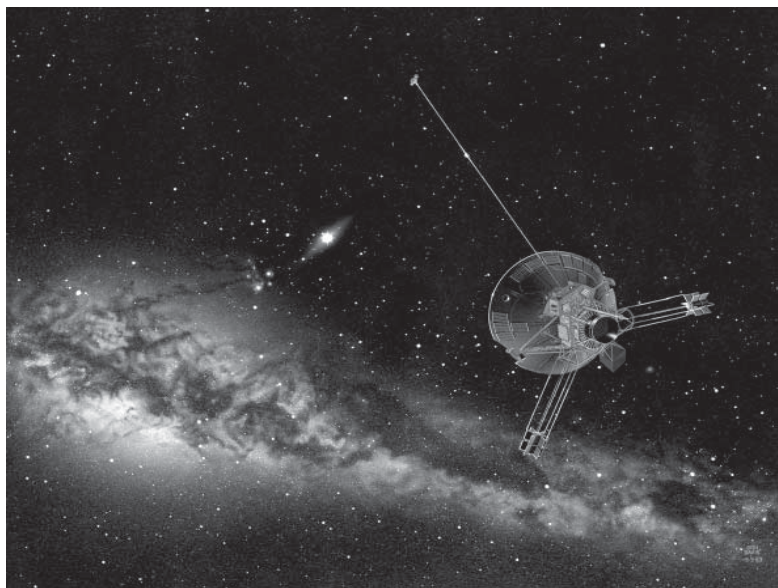
“बड़े भाग्यवान हो गुप्ता तुम!” जैक्सन ने कहा। हम यहाँ चक्कर पर चक्कर लगाते रहेंगे और तुम आराम-से ‘एक्स’ की तस्वीरें उतारोगे।” यान को ‘एक्स’ नाम दिया गया था।

“अपना-अपना नसीब है।” बड़ी

शान्ति से गुप्ता ने कहा। “बात सिर्फ इतनी है कि जब तस्वीरें उतारने का निर्णय किया गया, तब मेरी ड्यूटी लगी हुई थी।”

एक स्पेस कैप्सूल में उसने रिमोट सेंसिंग चित्रांकन के लिए आवश्यक सब सामान रख लिया। दो दिनों तक चल सके, इतना खाने-पीने का सामान रखा तथा आत्मरक्षा के लिए कुछ हथियार भी रख लिए। टाकेनो को चार्ज दिया और वह निकल पड़ा।

स्पेस कैप्सूल यानी एक छोटा-सा यान ही था जो वज़न में बहुत हल्का था। उसे बहुत कम रॉकेट पॉवर की ज़रूरत थी। एक सप्ताह चले, इतना ईंधन उसमें होता था। छोटी-मोटी



उड़ानों के लिए उसे उपयोग में लाया जाता था। गुप्ता ने अपने कन्ट्रोल कम्प्यूटर में भ्रमण कक्षा की जानकारी भर दी और कैप्सूल को SS यान से अलग कर तेज़ी-से अन्तरिक्ष में आगे बढ़ा दिया। उनके हिसाब से 'एक्स' यान से मुलाकात होने में अभी अठारह घण्टे बाकी थे। घड़ी में आठ का अलार्म लगाकर उसने सोने की तैयारी कर ली।

नियत समय पर उनके टी.वी. स्क्रीन पर 'एक्स' दिखाई दिया। एक किलोमीटर की दूरी रह जाने पर उसने अपने यान (कैप्सूल) की दिशा बदल दी और उसी दूरी को बनाए रखते हुए 'एक्स' के चारों ओर चक्कर लगाने की तैयारी कर ली। नया अजनबी यान छोटा था। उसे लगा कि इसे पहले कहीं देखा अवश्य है। पर याद न आया... कहाँ देखा है।

उसने रिमोट सेंसिंग चित्रांकन की सामग्री बाहर निकाली।

* * *

“कितना अनोखा संजोग है यहा” गुप्ता द्वारा भेजी गई तस्वीरों को देखते हुए डॉ. फ्लेमिंग ने कहा। वे अपने सहकर्मियों की ओर मुड़े और बोले, “क्या आप लोग पहचानते हैं इस यान को?” फिर सहकर्मियों के चेहरे पर आए कौतूहल को देखकर

वे बोले, “अरे! तुम आज के युवक, कभी पुराने साहित्य को पढ़ते हो भी या नहीं? यदि पढ़ते होते तो बात साफ समझ में आ जाती! दोस्तो, यह पृथ्वी का ही यान पायोनियर-10* है। सन् 1972 में इसे पृथ्वी से छोड़ा गया था। हमारा ग्रहमण्डल पार कर वह आकाश गंगा में अन्य सितारों के बीच चला गया था जो आज लौट आया है।”

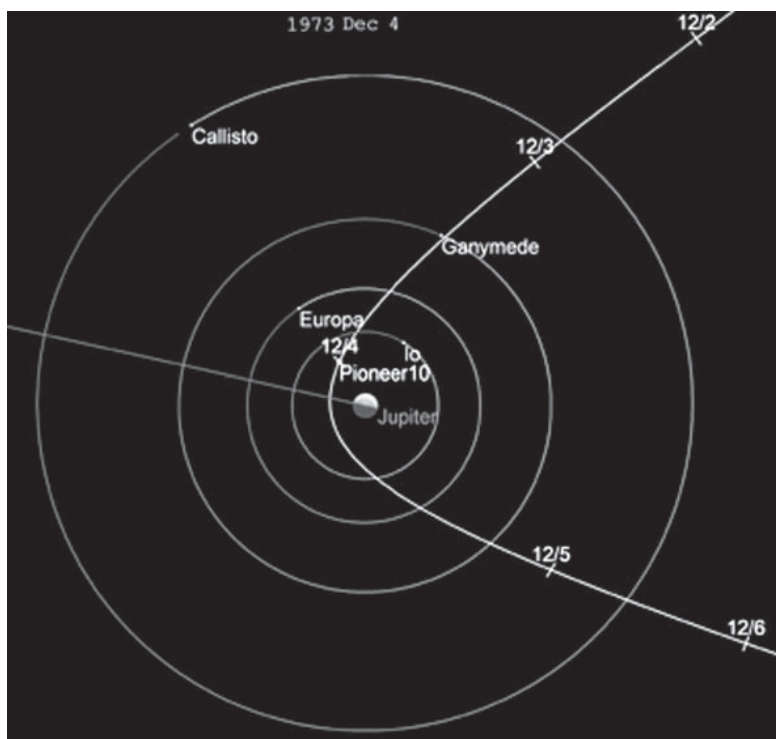
“किस लिए भेजा था यह यान?” एक सहकर्मी ने पूछा।

“एकाध यात्री अपनी सारी जानकारी एक कागज़ पर लिखकर बोतल में रखकर विशाल सागर में किस लिए फेंक देता है? शायद इसलिए कि कोई उस बोतल को देखे और खोजता हुआ उस तक पहुँच सके... शायद ठीक वही बात यहाँ भी है।”

फिर डॉ. फ्लेमिंग लाइब्रेरी से पायोनियर-10 की जानकारी वाले दस्तावेज़ ले आए और बोले, “देखिए! बाहर से ली गई ये तस्वीरें मूल यान से हूबहू मेल खाती हैं। और ये तस्वीरें देखिए, जिन्हें एक्स तथा गामा किरणों की मदद से लिया गया, जो यान के अन्दरूनी भाग की हैं। यह समूची सामग्री पायोनियर-10 की ही है।”

“और यह चित्रांकित फलक किस

* पायोनियर-10 नामक यान 3 मार्च, 1972 के दिन केप केनेडी से छोड़ा गया था। 3 दिसम्बर, 1973 के दौरान वह गुरु के निकट था। हमारा ग्रहमण्डल पार कर वह बहुत दूर निकल जाए, इस प्रकार का आयोजन किया गया था।



लिए है?” एक सहकर्मी ने पूछा। जो भय डॉ. फ्लेमिंग के मन में था, वही भय सबके मन में था।

“बोतल में पाई जाने वाली जानकारी की तरह, इस फलक पर अपनी पृथ्वी से सम्बन्धित जानकारी बाइनरी कोड (यानी 1 तथा 0 पर आधारित गुप्त सन्देश) में दी गई है। देखिए... जहाँ से यान निकला, वह हमारा ग्रह है जो सूर्य के बाद तीसरे नम्बर पर है। सूर्य का स्थान पल्सर्स तारों की दिशा के द्वारा दिखाया गया

है। पृथ्वी पर मौजूद स्त्री-पुरुषों को दिखाया गया है।” यान के अन्दर ठीक वैसा ही फलक था।

“पर, यह यान एक इतना लम्बा चक्कर लगाकर लौट आएगा, क्या ऐसी व्यवस्था की गई थी?”

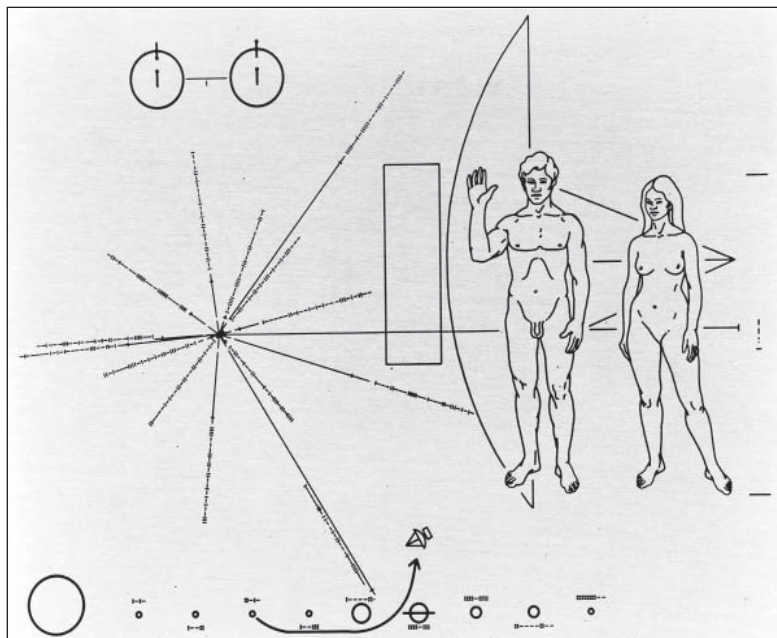
“बिल्कुल नहीं। इसीलिए मैंने शुरु में ही इसे संजोग कहा था। पर लगता है, मैं गलत था। यान का वापस आना, मात्र संजोग नहीं कहा जा सकता।” डॉ. फ्लेमिंग सोचते हुए बोले।

“क्या मतलब?”

“इतने विशाल अन्तरिक्ष में फेंका गया यान ठीक यहीं कैसे लौट आया? उसे निश्चित रूप से यहाँ भेजा गया है। पायोनियर-10 ज़रूर किसी विकसित प्रगतिशील संस्कृति/ग्रह के पास पहुँच गया होगा। उन्होंने कोड को सुलझाया होगा और हमारा अता-पता लगाकर उसे यहाँ भिजवाया होगा। यानी कि वो संस्कृति इतनी अधिक विकसित है। सोचिए कि वे हमसे कितने आगे होंगे। इस यान को इसकी मूल स्थिति में ही भेजकर, उन्होंने हमसे दोस्ती जताई है, ऐसा मुझे लगता है। हमारी ओर से ली गई

तस्वीरें यान के समूचे अन्तरंग को स्पष्ट रूप से दिखा रही हैं, वहाँ किसी भी प्रकार के शस्त्रास्त्र नहीं हैं। मुझे यकीन है कि पायोनियर-10 को उसके मूल ढाँचे में ही भेजा गया है। फिर भी आप सब यांत्रिक उपकरणों द्वारा इन तस्वीरों को अच्छी तरह से जाँच-परख लें। मैं चार घण्टे आराम कर रहा हूँ।” पिछले चौबीस घण्टों में फ्लेमिंग एक पल भी सो न पाए थे।

चार घण्टों के पश्चात् डॉ. फ्लेमिंग आँखें मलते हुए उठ बैठे। उनकी इच्छाशयनी उन्हें ऐसे समय काम आ जाती। ऑफिस जाने से पहले उन्होंने



एक कप कॉफी पी ली। वे निकलने ही वाले थे कि उनका दस वर्षीय पुत्र टॉम दौड़ता हुआ आया और बोला, “डैडी! ‘ट्रोजन हॉर्स’ क्या होता है? मैंने एक कहानी में यह शब्द पढ़ा परन्तु मतलब समझ में नहीं आया।”

“यह तो एक लम्बी कहानी है। किसी दिन फुर्सत से सुनाऊंगा तुम्हें। थोड़े में समझा देता हूँ। ट्रॉय नामक शहर पर ग्रीक लोगों ने घावा बोल दिया था। कई दिनों तक उनके घेरे से ट्रॉय जूझता रहा। अन्त में शत्रु ने एक नकली घोड़ा ट्रॉय के पास भिजवाया। उस घोड़े के अन्दर छिपकर कई योद्धा अन्दर पहुँच गए और इस कपट मार्ग से प्रवेश पाकर, उन्होंने ट्रॉय को हरा दिया।”

“यानी कपट के मार्ग से, निर्भय शत्रु की छावनी में प्रवेश करने वाले साधन को, ट्रोजन हॉर्स कहते हैं?” टॉम ने पूछा। इस प्रकार से टॉम की आशंका का अस्थायी समाधान मिल गया था, “पर पूरी कहानी सुनानी होगी कभी।”

“बिलकुल! कल ही सुना दूँगा।”

डॉ. फ्लेमिंग का मन अकारण ही उद्विग्न हो गया। बहुत सारे विचारों ने उन्हें घेर लिया। वे तत्परता से ऑफिस निकल गए।

* * *

USF के प्रमुख कॉन्फरेंस रूम में प्रतिनिधियों की सभा चल रही थी। तभी डॉ. फ्लेमिंग तेज़ी-से अन्दर

आए। उनका स्वागत करते हुए अध्यक्ष महोदय बोले।

“आइए, डॉ. फ्लेमिंग। बधाई हो! आपने जो हल निकाला, उसी की वजह से हमें पायोनियर-10 वापस मिल रहा है। वरना हमने तो उसे नाहक भस्म ही कर दिया होता। अब हम उसे पूरे सम्मान से पृथ्वी पर ले आएँगे।”

“ज़रा रुकिए जनाब! आपने मेरी बात सुन ली, इसके लिए धन्यवाद। पर यदि, मेरी एक और बात सुन लेंगे तो मैं और आभारी रहूँगा। इस यान को पृथ्वी पर लाने से पहले उसकी पूरी जाँच करवाना अत्यन्त आवश्यक है। जिन लोगों ने उसे हमारे पास वापस भेजा है, शायद वे हमारे मित्र न हों।” डॉ. फ्लेमिंग ने कहा।

“पर आपने तथा आपके सहकर्मियों ने यांत्रिक उपायों द्वारा भेजी हुई तमाम तस्वीरों को गुप्ता ने जाँचा-परखा है। उसमें कुछ भी नज़र नहीं आया। यदि आप और भी तस्वीरें चाहते हैं तो कहिए, गुप्ता अभी भी यान के चक्कर काट रहा है।”

“जी नहीं। अलग से जाँच करने की ज़रूरत नहीं है। आपकी अनुज्ञा लेने से पहले ही उसकी व्यवस्था मैंने कर ली है क्योंकि समय बड़ा महत्वपूर्ण है। पायोनियर-10 अब और नज़दीक आ रहा है। अभी-अभी तैयार किए गए फोटोग्राफी इलेक्ट्रॉन बीम उपकरण लेकर SS-6 से मैंने टाकेनो को वहाँ भेजा है।”

“पर उससे क्या फर्क पड़ने वाला है? तस्वीर लेने हेतु प्रकाश की बजाय इलेक्ट्रॉनों को उपयोग में लाना है, बस।” एक प्रतिनिधि बोला।

“यदि वैसा ही हुआ तो मैं पायोनियर-10 को सही मानूंगा। वरना...”

“वरना क्या?...”

“वरना वह ट्रोजन हॉर्स है। इसका मुझे यकीन हो जाएगा।” डॉ. फ्लेमिंग मुस्कराए। ग्रीक पौराणिक कथा से अन्य सभी अनभिज्ञ थे, सो उनके चेहरों पर उत्सुकता भरा कौतूहल था।

तभी अध्यक्ष महोदय के सामने रखे फोन की घण्टी बजी। उन्होंने रिसीवर कान से लगाया और कुछ सुनने के बाद फोन को नीचे रखा और शान्ति से बोले।

“दोस्तो, टाकेनो का सन्देश आया है। इलेक्ट्रॉन बीम की सहायता से उसने कई फोटोग्राफ्स लिए, पर वे सब कोरे हैं।”

सभी की नज़रें फ्लेमिंग की ओर मुड़ीं।

“यानी मेरा अन्दाज़ा सही रहा, वह हमारा भेजा यान नहीं है। वह एक प्रतिकृति है, एण्टी मैटर* की! उसे

किसी आवरण ने घेरा हुआ है शायद, जिसकी वजह से आसपास के मैटर से उसका सम्पर्क नहीं हो पाता। जिस प्रकार से इसका आवरण बनाया गया है, उस प्रौद्योगिकी से हम सर्वथा अनभिज्ञ हैं, पर उनकी प्रगति तो देखें कि इस प्रकार के आवरण को बनाकर, उसके अन्दर मूल यान की प्रतिकृति को रखकर, उसे यहाँ भेजा गया है। किस कदर वे प्रौद्योगिकी में हमसे आगे हैं। मैटर तथा एण्टीमैटर, दोनों का प्रकाश के साथ समान व्यवहार होता है। इसीलिए हम यान के बाहरी एवं अन्दरूनी भाग की तस्वीरें ठीक से ले पाए। परन्तु इलेक्ट्रॉन बीम को उस आवरण के अन्दर प्रवेश नहीं मिल पाया। इसलिए दूसरी बार की तस्वीरें कोरी रहीं। इलेक्ट्रॉन मैटर के बने होते हैं...

“मित्रो, यह यान निश्चित रूप से दोस्ती की भावना से प्रेरित होकर नहीं आया है। पृथ्वी पर उसका स्वागत करते समय आपका विनाश हो जाता। उस यान के खुलते ही मैटर तथा एण्टी मैटर का सम्पर्क हो जाता और बहुत बड़े पैमाने पर ऊर्जा निकलती जिसके आगे हमारे नाभिकीय अस्त्रों की ऊर्जा भी बहुत ही कम होती,” डॉ. फ्लेमिंग ने कहा।

* मैटर तथा एण्टी मैटर, पृथ्वी पर मौजूद परस्पर विरोधी घटक हैं। आधुनिक विज्ञान के अनुसार, प्रकाश के साथ दोनों की प्रक्रिया समान होती है। मैटर तथा एण्टी मैटर की वस्तुओं का बाह्य रूप समान होता है। उनके भौतिक गुण समान प्रतीत होते हैं परन्तु मैटर तथा एण्टी मैटर करीब आने पर, एक-दूसरे का विनाश करते हैं और भारी मात्रा में ऊर्जा का निर्माण होता है। हमारी पृथ्वी अथवा ग्रहमण्डल मैटर है। वहाँ एण्टी मैटर अधिक समय तक टिक नहीं पाता है।

“तब इस यान का विनाश कैसे करें?”

“यह तो मुश्किल काम नहीं है। हम रिमोट कण्ट्रोल की मदद से अन्तरिक्ष में उस यान को खोलेंगे और तुरन्त उस पर मैटर की वर्षा कर डालेंगे। उस काम को शीघ्रता से करना होगा।”

जिस प्रकार से तय किया गया था, सारा काम हो गया। उस यान के विनाश के समय जो भारी विस्फोट

हुआ, उसे दिन के उजियारे में भी पृथ्वी पर से देखा गया। सौभाग्य से, उसके कोई विशेष दुष्परिणाम न हो पाए।

“चलो छुट्टी हुई! पृथ्वी को बचाने के लिए धन्यवाद, डॉ. फ्लेमिंग” USF के अध्यक्ष ने कहा।

मगर डॉ. फ्लेमिंग चिन्तित थे। अनर्थ से बच गए...

पर यह आराम अस्थायी है। इसका एहसास उन्हें बेचैन कर रहा था।

जयंत विष्णु नारलीकर (1938-2025): प्रबुद्ध वैज्ञानिक और विज्ञान कथाकार। केंब्रिज से गणित में डिग्रियाँ हासिल करने के बाद उन्होंने खगोल-विद्या और खगोल-भौतिकी में विशेष प्रावीण्य प्राप्त किया। किंगज़ कॉलेज के फेलो और इंस्टिट्यूट ऑफ थिओरेटिकल एस्ट्रोनॉमी के संस्थापक सदस्य के रूप में कुछ समय केंब्रिज में रहे। IUCAA (Inter-University Centre for Astronomy and Astrophysics), पुणे के संस्थापक सदस्य। नारलीकर ‘पद्मभूषण’ और ‘पद्मविभूषण’ सहित कई राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हैं।

सभी चित्र इंटरनेट से साभार। समस्त चित्र एवं फोटो सन् 1972 को अन्तरिक्ष में भेजे गए वास्तविक यान पायोनियर-10 की बाहरी बनावट, अन्दरूनी सामग्री एवं उसके प्रक्षेपण पथ पर आधारित हैं।

यह कहानी सन् 2013 में विज्ञान प्रसार द्वारा प्रकाशित जयंत विष्णु नारलीकर के विज्ञान कथाओं के संकलन कृष्ण विवर और अन्य विज्ञान कथाएँ से साभार।

